**Shri Srinibas Misra:** I am not pressing it.

**Mr. Deputy-Speaker:** Has he leave of the House to withdraw his amendment?

**Hon. Members:** Yes.

*Amendment No. 6 was, by leave, withdrawn.*

**Mr. Deputy-Speaker:** The question is:

"That Clause 4 stand part of the Bill."

*The motion was adopted.*

*Clause 4 was added to the Bill*

**Clause 5.—** .—(*Amendment of section 5*)

**Shri Srinibas Misra:** I beg to move:

Page 2, line 29,—

*for* "relates to" *substitute*—

"is". (8).

Page 2, line 30,—

*after* "and" *insert*—

"territorial" (10)

Page 2, lines 31 and 32,—

*omit* "or friendly relations with foreign States" (11)

**Mr. Deputy-Speaker:** I now put the amendments to the vote of the House.

*Amendments No. 8, 10 and 11 were put and negatived.*

**Mr. Deputy-Speaker:** The question is:

"That Clause 5 stand part of the Bill."

*The motion was adopted.*

*Clause 5 was added to the Bill.*

*Clauses 6 to 11 were added to the*

**Clause 12.—** (*Substitution of new section for section 15*)

**Shri Srinibas Misra:** I beg to move:

Page 4, lines 13 and 14,—

*omit*, "or is attributable to any negligence on the part of". (12).

**Mr. Deputy-Speaker:** I now put the amendment to the vote of the House.

*Amendment No. 12 was put and negatived.*

**Mr. Deputy-Speaker:** The question is:

"That Clause 12 stand part of the Bill."

*The motion was adopted.*

*Clause 12 was added to the Bill.*

*Clause 13 was added to the Bill.*

*Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.*

**Shri Vidya Charan Shukla:** I move:

"That the Bill be passed."

**Mr. Deputy-Speaker:** The question is:

"That the Bill be passed."

*The motion was adopted.*

---

**20 hrs.**

## MOTION *RE* SITUATION ARISING OUT OF WORKING OF SUGAR INDUSTRY FOR SHORTER PERIOD DURING THE CRUSHING SEASON.

**श्री काशी नाथ पाण्डेय** (पदरौना) : उपाध्यक्ष महोदय, आज मुझे इस विषय में ज्यादा नहीं कहना है। चीनी के सम्बन्ध में जो एक गम्भीर समस्या हमारे देश में पैदा हो गई है उस की जानकारी सभी लोगों को है। पहली बात यह है

**20.0 1/4 hr.**

[SHRI G. S. DHILLON *in the Chair*].

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री** (हापुड़) : सभापति महोदय, पूर्व इसके कि श्री पाण्डेय अपना वक्तव्य प्रारम्भ करें, मैं आपके द्वारा यह कहना चाहता हूं कि आज कोठारी कमीशन की रिपोर्ट और संसदीय शिक्षा समिति की रिपोर्ट पर कुछ चर्चा होने वाली थी वह नहीं हो सकी। लेकिन शिक्षा मंत्री इस सम्बन्ध में कुछ वक्तव्य देने वाले थे कि भारत की शिक्षा सम्बन्धी नीति क्या होगी

होगी, विश्वविद्यालयों के स्तर तक माध्यम का रूप क्या होगा। यहां पर शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री उपस्थित हैं। आप अनुमति दें कि इस सम्बन्ध में वे कुछ कहें। उस के बाद श्री पाण्डेय प्रारम्भ करें। आर्डर पेपर पर यह चीज आई हुई है।

**संसद-कार्य तथा संचार मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : इस के बारे में कह सकना असम्भव है।

**श्री काशी नाथ पांडे** : चीनी की समस्या से सारा देश भिज्ञ है। मुझे इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना है, क्योंकि चीनी की कमी से सारे देश में जो हाहाकार मचा हुआ है उसे हम ही नहीं बल्कि बच्चा बच्चा महसूस कर रहा है कि चीनी की क्या अहमियत है। जरूरत इस बात की है कि हम देखें कि चीनी की कमी देश में क्यों हुई। जब तक इस बीमारी की तरफ हम नहीं जायेंगे तब तक इस की दवा भी नहीं हो सकती।

दूसरी बात यह भी है कि अभी तो यह हालत है कि जो चीनी पिछले साल पैदा हुई उस के ऊपर हम ने इस साल देखा है। अब यह विचार करना है कि क्या इस साल हालात ऐसे हैं कि यह अगले साल और सुधर सकते हैं। कुछ और भी बातें ऐसी हैं जिनके सम्बन्ध में आप का ध्यान आकर्षित करूं तो आप समझेंगे कि स्थिति कितनी गम्भीर है। चीनी की कमी से, क्योंकि चीनी मिलों में बनती है। हमारे देश में 200 शूगर फैक्ट्रियां हैं, जिन में करीब 2 लाख आदमी काम करते हैं, और इन मजदूरों को मिला कर उन की संख्या 10 लाख हो जाती है। उन का सम्पर्क जिन किसानों से है वह करोड़ों की संख्या में हैं जो चीज वह पैदा करते हैं फैक्ट्रियों में उस से करोड़ों का सम्बन्ध हैं और आज इस की कमी के कारण जो तकलीफें सारे समाज को भोगनी पड़ रही हैं उस का एहसास सब को है।

पिछले वर्ष पहली बात तो यह हुई कि हमारे देश में एक पालिसी गवर्नमेंट की यह हुई कि ज्यों ज्यों हमारे देश में चीनी की जरूरत बढ़ती गई, वह जो हमारी फैक्ट्रियां हैं उन की क्रशिंग की कपैसिटी बढ़ाती गई। दूसरी तरफ उस ने यह ध्यान नहीं दिया कि यह जो फैक्ट्रियां लगी हैं उन की क्षमता बढ़ी तो उन को गन्ना भी मिल सकेगा या नहीं। गन्ना किसानों के घर में पैदा होता है और गन्ने के लिये जरूरत इस बात की है कि किसानों को उन के गन्ने का उचित मूल्य मिले। आज हालत यह है कि हमारे मंत्री महोदय ने राज्य सभा में स्टेटमेंट दिया है, मैं आप को बतलाऊं कि अगले साल क्या भयावह स्थिति पैदा होने वाली है, वह उन के बयान से अच्छी तरह सिद्ध हो जाता है। वह यह कि इस देश में 1965-66 में 67 लाख एकड़ में गन्ने की खेती होती थी, लेकिन 1967 में वह खेती घटाकर 59 लाख एकड़ में रह गई। 60 लाख एकड़ के करीब। 59 और 60 लाख एकड़ के बीच में। इस का मतलब यह है कि करीब 9 लाख एकड़ जमीन में गन्ने की खेती नहीं हो सकी इस के दो कारण हैं। एक तो यह कि देश में वर्षा की कमी से, दूसरी बात यह कि जिस जमीन में गन्ने की पैदावार होती थी उस में भी कमी होती गई। यह किसी भय का संकेत करता है। वह क्या है? एक जमाना था कि शूगर फैक्ट्रियों में अक्सर यह होता था कि जब कभी भी चीनी की कमी होती थी तो देश में गन्ने का दाम बढ़ा दिया जाता था, चीनी बढ़ जाती थी और जब चीनी ज्यादा होती थी तो गन्ने का दाम घटा दिया जाता था और चीनी ज्यादा पैदा हो जाती थी। लेकिन आज गवर्नमेंट की इस मशीनरी से चीनी की समस्या को हल नहीं कर सकती, क्योंकि आज देश के अन्दर जो अच्छे बीज आ गये हैं कई तरह के, जैसे महाराष्ट्र में बाजरा और दूसरी चीजें, यू० पी० और पंजाब में गेहूं

[श्री काशी नाथ पांडे]

धान और मक्का तथा दूसरी चीजें, उन से किसान को पैसा ज्यादा मिल रहा है बनिस्बत गन्ने के ।

पिछले वर्ष ही यह खतरा आया शूगर फैक्ट्रियों में । गन्ने के दाम बड़ी मुश्किल से उन्होंने 2 रुपया मन रखा था । बहुत हल्ला मचा तो उस के बाद 2।। रु० मन तक गन्ने के दाम हुए वैस्ट में । लेकिन 2।। रु० मन के बावजूद भी जो फैक्ट्रियां चली हैं उन का समय आप देख सकते हैं । आप यह देखिये कि वेस्ट बंगाल में तो खैर दो ही फैक्ट्रियां हैं लेकिन 107 दिन का सीजन रखा गया था लेकिन फैक्ट्रियां चलीं 73 दिन, नार्थ बिहार का सीजन था 151 दिन का, फैक्ट्रियां चली 82 दिन, साउथ बिहार में सीजन था 91 दिन, फैक्ट्रियां चली 33 दिन , इसी तरह से ईस्ट उत्तर प्रदेश में सीजन था 149 दिन फैक्ट्रियां चलीं 90 दिन, पंजाब में सीजन था 184 दिन और फैक्ट्रियां चलीं 89 दिन, मध्य प्रदेश में सीजन था 111 दिन और फैक्ट्रियां चलीं 31 दिन, नतीजा यह हुआ कि जिस देश में 1965-66 में 35 लाख टन चीनी बनी थी उस देश में 22 लाख टन चीनी बनी और इस तरह से गन्ने का एकरेज भी घटा । इस के साथ-साथ प्रकृति का भी प्रकोप हुआ । गन्ने की खेती पर । इस लिए अगर गन्ने के दाम इतने न बढ़ाये गये जिस से कि किसान के पास जो कुछ भी गन्ना है वह फैक्ट्रियों में आ सके तो इस देश में चीनी का उत्पादन और भी घट कर 12या 15 लाख टन से ज्यादा नहीं रह जायेगा ।

मैं अभी बम्बई में गया था तो मैंने देखा कि पूना में इस वक्त जब कि गन्ने से कोई गुड़ या चीनी निकल नहीं सकती, लोग गन्ना काट कर गुड़ नहीं बना रहे हैं और 3 रु० किलो गुड़ बिक रहा है । इस लिये चीनी और गुड़ वहां नहीं मिलता । आज सभी जगहों की हालत यह है । मैं नहीं समझता कि गवर्नमेंट इस चीज को हल करने के लिये कैसे तैयार है । मैं इन चीजों की अटकलबाजी अखबार में भी देखता हूं । अभी मैंने देखा 60 परसेंट कंट्रोल और 40 परसेंट डिकंट्रोल की बात होती है । पहले तो मैं इस के मतलब ही नहीं समझता । मैं आप को बतलाऊं कि या तो आप कम्प्लीट कंट्रोल रखिये या कम्प्लीट डिकंट्रोल रखिये । दोनों चीजें एक साथ चलने वाली नहीं हैं जो लोग डिकंट्रोल की बात कहते हैं वह इस के लिये आज वैस्ट पंजाब में और दूसरी जगहों में जहां पर चीनी बल्कि पैदा होती है वहां 5 रु० मन भी गन्ना शुगर फैक्ट्रियों को नहीं मिल रहा है । अगर आप समझते हैं कि आप पांच रुपये मन गन्ने के दाम तय कर सकते हैं और उसके बाद आप पर कोई प्रेशर नहीं पड़ेगा और आपको दूसरी जो चीजें हैं उनके दाम नहीं बढ़ाने पड़ेंगे तो जरुर आप पांच रुपये मन गन्ने का भाव तय करें । नहीं तो आप फैक्ट्रीज पर छोड़ दें कि वे अपना काम ठीक तरह से चलायें । आज देश में ज्यादा चीनी पैदा करने की जरूरत है । यह जरूर है कि अगर चीनी का डिकंट्रोल होगा उसके बाद चीनी के दाम बढ़ेंगे । लेकिन जब चीनी ज्यादा पैदा होगी और गुड़ और खण्डसारी भी पैदा होगी तो कम्पीटीशन में इसके दाम घटेंगे । यह इकोनोमिक थ्यूरी है, इकोनोमिक्स का यह सिद्धान्त है ।

एक दूसरी तरकीब भी हो सकती है । अगर आप गन्ने की ऊंची कीमत नहीं रखते हैं तो आप देखें कि शूगर फैक्ट्री और शूगर पर तो आप कंट्रोल रखते हैं लेकिन गुड़ और खण्डसारी पर बिल्कुल कंट्रोल नहीं रखते हैं । अगर कंट्रोल ही रखना है तो गुड़ और खांडसारी पर भी रखें और कम्प्लीट कंट्रोल करें . . . .

**Shri Sonavane (Pandharpur):** Let there be factories all around the sugarcane producing areas.

**श्री काशी नाथ पांडे :** मैंने देखा कि अब तक गवर्नमेंट ने इस बात की कोशिश की है

कि वह गुड़ पर कंट्रोल न करें। इस में न केवल व्यावहारिक कठिनाइयां हैं बल्कि राजनीतिक भी कठिनाइयां हैं..

**Shri Sonavane:** Only the interested people are asking for control of gur and khandsari.

**श्री काशीनाथ पांडे** : गवर्नमेंट कहती है कि अमुक रिजन में इतना सीजन होना चाहिये। मैं जानना चाहता हूं कि इसका आधार क्या होता है ? क्यों आप सीजन फिक्स करते हैं और किस आधार पर करते हैं ? मेरा ख्याल है कि आप इस अनुमान पर ऐसा करते हैं कि यहां की फैक्ट्रीज को इतना गन्ना मिल सकता है और उसके बाद आप कंट्रोल करते हैं, प्राइसिस फिक्स करते हैं। जब आप यह सब कुछ करते हैं तो यह आपकी मोरल और लीगल ड्यूटी हो जाती है कि उन फैक्ट्रियों को आप गन्ना सप्लाई करें। मैं मजदूरों के हित की दृष्टि से यह बात कह रहा हूं। मजदूरों के हित की लड़ाई मैं कर रहा हूं। देश में चीनी की ज्यों ज्यों खपत बढ़ी है त्यों त्यों चीनी मिलों की क्षमता पिराई की भी बढ़ती गई है। आज पिराई की 33 लाख और कुछ टन की क्षमता है। इसका नतीजा क्या हुआ है ? गन्ने की पैदावार घट गई है और चीनी की पिराई की क्षमता बढ़ गई है और जो कुछ भी सप्लाई उनको मिलती है, फैक्ट्री वालों को मिलती है उसको जल्दी से वे खत्म कर देते हैं और जो फैक्ट्री चार महीने चलनी थी वह दो महीने में ही बन्द हो गई है। आप सोचिये मजदूर का क्या हाल होता होगा उसको बारह महीने बच्चों को खिलाना होता है और काम उसको केवल दो महीने ही मिला है। उनको सामने आज यह बहुत बड़ी समस्या है।

शूगर का मसला एक ऐसा मसला है कि आप अगर व्यावहरिक चीज को सामने रख कर काम नहीं करेंगे तो एक खतरा आगे चल कर आएगा। अगले सीजन के बाद से जो स्थिति पैदा होगी वह आपके कंट्रोल में नहीं रहेगी वह आपके कंट्रोल से बाहर हो जाएगी।

बहुत से लोग कहते हैं कि चीनी के दाम बहुत बढ़ जायेंगे। मैं बता रहा हूं ...

**Shri Shri Chand Goel** (Chandigarh): The hon. Member has got about a dozen pages, and he has covered only two. Is there any time limit, because it is already 20 past 8?

**सभापति महोदय** : कितनी देर और लेना चाहते हैं।

**श्री काशीनाथ पांडे** : तीन चार मिनट में खत्म कर दूंगा।

इस वक्त गवर्नमेंट ने जो चीनी को कंट्रोल कर रखा है इससे कंज्यूमर को बहुत तकलिफ है, यह मैं मानता हूं। गवर्नमेंट ने जो भाव तय किये हैं वह शायद 1 रुपया 34 पैसे या 1 रुपया 45 पैसे किलो है। लेकिन आप देखें कि व्हाइट शूगर, शफेद चीनी आज बाजार में चार रुपये किलो पर बिक रही है। फिर आप यह भी देखें कि आप कितनी शूगर रिलीज कर रहे हैं। पहले आप कहते थे 2 लाख 50 हजार टन पर मंथ और अब उसको घटा कर आपने 1 लाख 57 हजार टन कर दिया है। अब आप देखें कि लोग कहां से अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर रहे हैं ? ब्लैक मार्किट से ही तो कर रहे हैं। आपने चीनी पर कंट्रोल तो किया हुआ है लेकिन आप का यह फर्ज भी हो जाता है कि आप लोगों को कंट्रोल रेट पर चीनी दिलायें भी। लेकिन आप दिला नहीं सकते हैं। प्राइस पर इसका मतलब यह होता है कि आपका कंट्रोल है भी और नहीं भी है। ये दोनों चीजें साथ साथ नहीं चल सकती हैं, यह समझ में आने वाली बात नहीं है ....

**एक माननीय सदस्य** : होर्डर्ज को सजा दिलाइये।

**श्री काशीनाथ पांडे** : होर्डर्ज बाद में में आयेंगे। फिलहाल तो चीनी ज्यादा कैसे पैदा हो, इसको देखना होगा।

[श्री काशीनाथ पांडे]

जो गुड़ पहले एक रुपये या बारह आने किलो बिकता था वह आज तीन रुपये बिक रहा है, ढाई रुपये किलो बिक रहा है ।

**एक माननीय सदस्य :** जागसरेपुर में साढ़े तीन रुपये किलो है ।

**श्री काशीनाथ पाण्डे :** हमारे मंत्री महोदय बहुत अनुभवी आदमी हैं । वह शूगर की पोजीशन को अच्छी तरह से जानते हैं । वह व्यावहारिक भी हैं मैं उनको कहना चाहता हूं कि डरने से काम नहीं चलेगा । वह हिम्मत से काम लें । अगर आप समझते हैं कि कंट्रोल से या किसी तरीके से आप देश को मुनासिब दामों पर चीनी दिला सकते हैं तो जरूर कंट्रोल रखिये, स्ट्रिक्ट कंट्रोल रखिये, मुझे कोई एतराज नहीं है । लेकिन आप नहीं दिला सकते हैं । आज आपको चीनी की व्यवस्था करनी है । ईश्वर के नाम पर आप अपना हाथ खींच लें । अगर आपने ऐसा किया कम से कम गाली खाने से तो आप बच जायेंगे ....

**श्री स० मो० बनर्जी :** (कानपुर) : छः रुपये किलो बिकेगी ।

**श्री काशीनाथ पांडे :** अभी बिक रही है आप रोक नहीं सकते हैं ।

आप देखें कि शूगर फैक्ट्रीज के जो मजदूर हैं उनकी दशा दयनीय है । जिस तरह से केन शूगर फैक्ट्रीज से डाइवर्ट हो रहा है अगर ऐसे ही होता रहा तो थोड़े दिन के बाद आप देखेंगे कि शूगर फैक्ट्री में गन्ना नहीं आएगा ।

**श्री शशि भूषण वाजपेयी** (खार गांव): मालिकों की हालत बहुत खराब है ।

**श्री काशीनाथ पांडे :** फैक्ट्रियां नहीं चलेंगी तो मालिकों की हालत तो खराब होगी ही ।

बहुत से हमारे भाई हैं जोकि भावुकता में बह कर बात करते हैं । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि यह अर्थ शास्त्र की बात है । यह हिसाब किताब की बात है । इस में भावुकता का सवाल नहीं चलेगा । अगर गलत मैं कहता हूं तो मुझे गलत बता दीजिये । अगर कोई और गलत और बेहतर आल्टरनेटिव हो सकता है तो उसको बता दीजिये। मजदूर, कंज्यूमर, किसान आदि सब मर रहे हैं । अगर यही तरीका आपने चलाया तो न केवल शूगर फैक्ट्रियां बरबाद हो जायेंगी बल्कि कंज्यूमर और मजदूर के साथ साथ सब बरबाद हो जायेंगे ।

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री :** सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता कि मूल प्रस्ताव के स्थान पर यह रखा जाए, अर्थात् :

"गन्ना पेरने के पिछले मौसम में चीनी उद्योग के अपेक्षाकृत कम समय कार्य करने के परिणामस्वरूप उत्पन्न स्थिति पर विचार करने के पश्चात् यह सभा सिफारिश करती है कि—

(1) गन्ने की कीमत चीनी के भाव को ध्यान में रख कर निश्चित की जाए, तथा (2) गन्ने का भाव उसकी बुवाई से पूर्व ही घोषित किया जाए ताकि किसान को यह निश्चय करने में सुविधा हो कि भूमि के कितने भाग में गन्ना बोना है" (1)

सभापति महोदय, मैंने अपना स्थानापन्न प्रस्ताव पेश कर दिया है और इस पर भाषण श्री रघुवीर सिंह शास्त्री जी करेंगे ।

**Shri D. N. Patodia** (Lahore): Sir, Shri Kashinath Pandey has explained in detail the difficulties that arose on account of the shortage of sugarcane and also the diversion of land.

**श्री मु० अ० खां** (कासगंज) : सभापति महोदय कोरम नहीं है ।

**सभापति महोदय :** कोरम चैलेंज किया गया है । घंटी बजाई जाए । (*Interruptions.*)

**Shri D. N. Patodia:** Shri Pandey has also explained,—

**Mr. Chairman:** The quorum bell is ringing. Let us wait.

Now, I am sorry there is no quorum. Objection was raised owing to lack of quorum. There is no other alternative except to adjourn the House *sine die*.

**20.25 hrs.**

(*The Lok Sabha then adjourned* sine die.)

GMGIPND—M—1926L. S. J. C.10847—14-6-68—1010